International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi :https://doi.org/10.32628/IJSRST

भारत में आर्थिक समृद्धि एवं रोजगार के अवसर— चुनौतियां एवं संभावनाएं

भानुप्रकाश भास्कर
प्रवक्ता (अर्थशास्त्र) सर्वोदय इ. का. पियरगाँव, फर्रुखाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume9, Issue 2
Page Number: 606-608

Publication Issue
March-April-2022

Article History
Accepted :03 April 2022
Published :20 April 2022

शोध सारांश — भारत युवाओं का देश है, भारत मे 15-64 वर्ष की 67.8 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। इसलिए भारत को जनांकिकीय लाभांश की स्थिति प्राप्त है। भारत के जी.डी.पी. ने कृषि क्षेत्र का योगदान सबसे कम 18 प्रतिशत है। किंतु भारत की 49 प्रतिशत जनसंख्या आज भी कृषि क्षेत्र पर निर्भर है। जबकि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र में निर्भरता क्रमश: 14 एवं 27 प्रतिशत है। इससे स्पष्ट होता है, कि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र भारतीय श्रमबल को आज भी खपाने में असमर्थ है। भारत में रोजगार में वृद्धि एवं जी.डी.पी. में वृद्धि के बीच विपरीत संबंध देखने को मिला है। अर्थात भारत में जॉबलेश ग्रोथ की स्थिति निर्मित हुयी हैं।

शब्द कुंजी - आर्थिक समृद्धि, जॉबलेश ग्रोथ, समावेशी विकास, ट्रिकल डाउन थ्योरी, जनांकिकीय लाभांश, मानव विकास, फ्लिप्स वक्र ।

प्रस्तावना—आर्थिक विकास से आशय किसी देश में एक वर्ष में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन में होने वाली मात्रात्मक वृद्धि से है। मीर एवं राउच के अनुसार मात्रात्मक आर्थिक प्रगति ही आर्थिक समृद्धि है। आर्थिक समृद्धि धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनो हो सकती है। भारत ने पिछले कई वर्षो से आर्थिक प्रगति की है। 1980-81 से 1990-91 के दौरान देश की आर्थिक समृद्धि दर 5.2 प्रतिशत थी, जो सुधार काल के उपरांत 1990-91 से 2000-2001 के दौरान 5.6 प्रतिशत हो गयी। तत्पश्चात् 2000-01 से 2003-04 के मध्य 6 प्रतिशत रही। जो तीव्रगति से बढ़कर 2004-05 से 2009-10 के बीच 8.7 प्रतिशत हो गयी । आर्थिक समीक्षा 2020-21 अनुसार भारत की जी.डी.पी. ग्रोथ वर्ष 2017-18 में 7 प्रतिशत 2019-20 में 4. 2 प्रतिशत तथा 2020-21 में 7.3 प्रतिशत की गिरावट के बाद वर्ष 2021-22 में भारतीय अर्थव्यवस्था के 9.3 प्रतिशत बढ़ने का अनुमान है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के वर्ल्ड एकोनॉमिक आउटलुक के अनुसार वर्ष 2022-23 में भारत की रियल जी.डी.पी. विकास दर 9 प्रतिशत और 2023-24 में 7.1 प्रतिशत रहने की संभावना व्यक्त की गयी है। बेरोजगारी से आशय उस श्रम शक्ति से है जो काम करने के इच्छुक है, काम करना चाहते है, काम ढूडने का प्रयास करते है। फिर भी उन्हे काम नहीं मिल पाता है। वास्तव में भारत मे अदृश्य बेरोजगारी की स्थिति पाई जाती है। जिसमें श्रम शक्ति काम में लगी हुयी दिखाई देती है, लेकिन उत्पादन में उसका कोई योगदान नहीं होता है। भारत में जिस गति से जी.डी.पी. में वृद्धि हुयी है। उसका अनुशरण रोजगार में वृद्धि ने नहीं किया है। जबकि ट्रिकल डाउन थ्योरी के अनुसार यदि जी. डी.पी. बढ़ती है, तो उसके प्रभाव के कारण गरीबी एवं बेरोजगारी में कमी आती है ।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शोध के उद्देश्य -

1. भारत में आर्थिक समृद्धि एवं रोजगार के बीच संबंध ज्ञात करना ।
2. रोजगार में कृषि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र के योगदान का अध्ययन करना ।

शोध प्रविधि—यह शोध पत्र मूलतः द्वितीयक समंको पर आधारित है। इसमें अध्ययन के लिए वर्ष 1950-51 से 2021-22 के मध्य प्राप्त समंको का अध्ययन किया गया है। द्वितीयक समंको का संकलन आर्थिक सर्वेक्षण, आई.एम.एफ., वर्ल्ड बैंक एवं अन्य शोध-पत्र एवं पत्रिकाओं से किया गया है। समंको के विशलेषण में प्रतिशत विधि एवं आवश्यकतानुसार अन्य विधियों का प्रयोग किया गया है।

भारत के विभिन्न क्षेत्रो में कार्यरत श्रमबल की स्थिति — भारत के प्राथमिक क्षेत्र में 48.9 प्रतिशत श्रमबल कृषि क्षेत्र में कार्यरत है। जबकि द्वितीयक क्षेत्र में 24.3 प्रतिशत तथा तृतीयक / सेवा क्षेत्र में 26.8 प्रतिशत श्रमबल कार्यरत है। भारतीय जी.डी.पी. में कृषि क्षेत्र का योगदान 18 प्रतिशत है। जो कि सबसे कम है। जबकि सबसे ज्यादा रोजगार 48.9 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ही प्रदान करता है। सेवा क्षेत्र का योगदान जी. डी. पी. में 55 प्रतिशत है। जबकि वह मात्र 26.8 प्रतिशत ही लोगो को रोजगार प्रदान करता है। अतः स्पष्ट है, कि कृषि क्षेत्र ही भारत के आर्थिक विकास का आधार है।

भारत में कार्यरत श्रम शक्ति की स्थिति, 2011-12 (%)

क्षेत्र	कार्यरत श्रम शक्ति
प्राथमिक क्षेत्र / कृषि क्षेत्र	**48.9**
द्वितीयक / औद्योगिक क्षेत्र	**24.3**
तृतीयक / सेवा क्षेत्र	**26.8**

स्त्रोतः —NSS 68 राउण्ड 2011-12

भारत में जी.डी.पी. एवं रोजगार में संबंध—सामन्यतः जी.डी.पी. एवं रोजगार के मध्य धनात्मक संबंध देखने को मिलता है। अर्थात जैसे-जैसे जी.डी.पी. में वृद्धि होती है वैसे-वैसे रोजगार में भी वृद्धि होती जाती है। यदि जी.डी.पी. में वृद्धि रोजगार में बढ़ोत्तरी कर पाती है तो उसे समावेशी विकास की संज्ञा दी जाती है। भारत में भी समावेशी विकास की अवधारणा को साकार करने का प्रयास किया गया है। लेकिन वास्तव में भारत में पिछले दो दशको का अनुभव दर्शाता है, कि तीव्र आर्थिक वृद्धि के बावजूद जो रोजगार के अवसर बनाये गये वो अपर्याप्त थे। जो कि अग्रसारणी से स्पष्ट है—

भारत में जी.डी.पी वृद्धि एवं रोजगार वृद्धि

अवधि	जी.डी.पी.वृद्धि	रोजगार वृद्धि
1972-73 से 1983	**4.66**	**2.44**
1983 से 1993-94	**4.98**	**2.02**

1993-94 से 2004-2005	**6.27**	**1.84**
2004-05 से 2009-10	**9.08**	**0.22**
2010 से 2012	**7.8**	**1.12**

1990 से स्रोत– NSS 68 राउण्ड 2011-12 एवं महेन्द्र देव आलेख रोजगार और आर्थिक 2010 के बीच वृद्धि योजना अक्टूबर 2013 भारतीय अर्थव्यवस्था औसतन 6 से 7 फीसदी की विकास दर से आगे बढ़ी है। और किसी भी लिहाज से यह विकास दर खराब नहीं कहीं जा सकती है। दिक्कत यह रही है, कि भारतीय अर्थव्यवस्था ने यह विकास दर सेवा क्षेत्र खासकर सूचना प्रौद्योगिकी कंपनियों के दम पर हॉसिल किया है। जो कि टिकाऊ विकास का सूचक नहीं है। यही वजह हमारे विकास से समावेशी शब्द को अलग कर देता है। भारतीय अर्थव्यवस्था की ऊंची विकास दर को जॉबलेश ग्रोथ का दौर कहा जाता है।

निष्कर्ष – निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है, कि भारत में आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ रोजगार में वृद्धि नहीं हो पाई है। इसके लिए आवश्यक है, कि कृषि क्षेत्र का तीव्रगति से विकास किया जाय । तत्पश्चात् विनिर्माण क्षेत्र का और उसके बाद सेवा क्षेत्र को प्राथमिकता दी जाय। साथ ही जहां श्रम प्रदान तकनीकी से उत्पादन करने की संभावना हो वहां पूंजी प्रदान तकनीकी का प्रयोग न किया जाय । जैसा कि लेविस ने कहा है, कि जब प्रचलित मौद्रिक मजदूरी दर पर श्रम का आधिक्य हो तो उस मजदूरी दर पर पंजी को उत्पादक नहीं माना जा सकता है। यदि वह ठीक वही काम करती है, जिसे श्रम भी उतनी ही अधिक अच्छी तरह से कर सकता है। इस तरह के निवेश पूंजीपतियों के लिए भले ही लाभप्रद हो लेकिन समाज के दृष्टिकोण से वे अलाभकारी होंगे क्योकि उनसे बेरोजगारी बढ़ेगी न कि उत्पादन ।

संदर्भ –

1. महेन्द्र देव, आलेख "रोजगार और आर्थिक वृद्धि" योजना अक्टूबर 2013
2. भारतीय अर्थ व्यवस्था का विकास, एन.सी.ई.आर.टी. 2005
3. टरविंद कुमार सेन जनांकिकीय लाभांश या जनसंख्या अभिशाप योजना अक्टूबर 2013
4. W.A. Lawis, "The Theory of Economic Growth" Oxford University Press London 1955
5. C.S.O. 2012
6. Economics Survey 2021-22